>

Title: Need to ensure livelihood and social security of persons hailing from Uttarakhand trained in Guerrilla warfare and who rendered their services during Bangladesh war and in various covert operations.

मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) भुवन चन्द्र खंडूड़ी, एवीएसएम (गढ़वाल): ""गुरिल्ला"" शब्द स्पेनिश भाषा से लिया गया है । भारत में ""गुरिल्ला वार"" की आवश्यकता एवं महत्व को वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध के पश्चात् समझा एवं महसूस किया गया । सर्वप्रथम आई.टी.बी.पी. में इसका जन्म हुआ था । इसके साथ 1963 में एस.एस.बी. का गठन "सेवा-सुरक्षा-बंधुत्व" नारे के साथ हुआ । गुरिल्ला की भर्ती आरम्भ कर 45 दिवसीय गुरिल्ला गहन प्रशिक्षण दिया जाता था । गुरिल्ला वाहिनी एस.एस.बी. के रूप में बांग्लादेश को आजाद कराने में सफल रही, साथ ही देश हित में कई गोपनीय अभियानों को सफल बनाने में एस.एस.बी. ने महारथ हासिल की । वर्ष 2004 में गृह मंत्रालय के अधीन कर इसे "सशस्त्र सीमा बल" कर दिया गया किंतु गुरिल्ला फोर्स के लिए कोई नीति निर्धारित नहीं की गई है । वर्तमान में प्रशिक्षण प्राप्त गुरिल्लाओं ने संगठन बनाकर अपने हकों की लड़ाई का एलान कर दिया है ।

उत्तराखण्ड में गुरिल्ला समाज बहुत बड़ी तादाद में रहते हैं और समय-समय पर अपनी मांगें उठाते रहते हैं । वर्तमान में ये लोग दिल्ली में जंतर-मंतर पर धरने पर बैठे हैं ।

अतः मेरा गृह मंत्रालय से अनुरोध हे कि जिस तरह से पूर्वोत्तर राज्यों की भांति पश्चिमोत्तर राज्यों के गुरिल्लाओं को भी सहयोग दिया जाए । प्रशिक्षित गुरिल्लाओं को एस.एस.बी. में यथासंभव नौकरी देने और ज्यादा उम्र के गुरिल्लाओं को पेंशन देने इत्यादि बातों पर केन्द्र सरकार शीघ्र उच्च स्तर की जांच पड़ताल कर गुरिल्लाओं को जिन्होंने संकट के समय देश के हित में काम किया, यथासंभव मदद करनी चाहिए ।